खलिहान के उल्लू

फिलिस फ्लावर

चित्र: चेरिल पेप

एक खलिहान के कोने में, पाँच छोटे उल्लू घोंसले में बैठे हैं। अचानक एक भूखा उल्लू छत से चढ़कर उनके पास आता है। उल्लू फुफकारते हैं। बिल्ली ऊपर चढ़ती रहती है। लेकिन ठीक समय पर, उल्लुओं की माँ शिकार से लौट आती है।

यह आसानी से पढ़ी जाने वाली साइंस की किताब “बार्न” उल्लुओं के शिकार करने के तरीकों के बारे में बताती है, जब वे रात में उड़ते हैं। इसमें उनके तेज़ पंजे और उनके सिर के बारे में बताया गया है जो पीछे की चीज़ें देखने के लिए घूम सकता है। यह उल्लू के अंडे से निकलने से लेकर बार्न छोड़ने और अपना साथी ढूंढने तक की कहानी बताती है।

सटीक, संवेदनशील रंगीन चित्र “बार्न” उल्लुओं के विकास को विस्तार से दिखाते हैं, और उस दुनिया को दिखाते हैं जिसमें वे रहते हैं।

खलिहान के उल्लू

फिलिस फ्लावर
चित्र: चेरिल पेप

खलिहान के ऊँचे कोने में,
खलिहान उल्लू माँ बैठी है
और इंतज़ार कर रही है।
वह अपने अंडों पर बैठी है
वह लगभग एक महीने तक
वहां बैठेगी।

कभी-कभी दिन के दौरान
उसका नर साथी भी उसके पास बैठता है
जब वह भूखी होती है,
तो वह उसके लिए खाना लाता है।

आखिरकार उसे अपने नीचे
कुछ हिलता हुआ महसूस होता है
वह खड़ी हो जाती है
और अपने अंडों को देखती है।
वे सफ़ेद और अंडाकार हैं,
मुर्गी के अंडों से भी छोटे।
कल रात पाँच थे।
लेकिन अब चार ही हैं।
उनके बगल में
उसे एक छोटा सा सफ़ेद टीला दिखाई देता है।
खलिहान उल्लू माँ अपना सिर हिलाती है
वह अपने नए बच्चे को देखती है।

चूज़े के छोटे-छोटे सफेद पंख हैं
जिन्हें डाउन कहते हैं।
वे अभी गीले हैं।
लेकिन वे जल्द ही सूख जाएंगे
और रोयेंदार बन जाते हैं।
उसका चेहरा दिल के आकार का है
अपनी माँ की तरह
उसकी आँखें भी अभी बंद हैं।

उसकी चोंच मुड़ी हुई है।
उसकी चोंच के सिरे पर
यह एक विशेष दांत है - एक अंडा दांत।
उल्लू ने उसका इस्तेमाल
अपने खोल को तोड़ने के लिए किया।
पर जल्द ही वो दांत गिर जाएगा,
क्योंकि अब उसे इसकी ज़रूरत नहीं होगी।
कान उसके सिर पर हैं,
और वो पंखों में छिपे हुए हैं।

उसके हर पैर में चार मजबूत उंगलियां हैं।
प्रत्येक पैर के अंगूठे के अंत में
एक तेज़ हुक है।
इसे टैलोन कहते हैं।
किसी दिन वह अपने पंजों का इस्तेमाल
शिकार करने के लिए करेगा।
एक पंजे की धार बहुत खुरदरी है।
वह इसका इस्तेमाल
अपने पंखों की कंघी
करने के लिए करेगा।

अब उल्लू थक गया है।
उसके लिए अपना खोल तोड़ना
बहुत कठिन काम था।
अब उसे आराम की ज़रूरत है।
फिर वह अ पनी माँ के पंखों
के नीचे दुबककर सो जाता है.

जब वह जागता है,
तब वह भूखा होता है.
अब वह खाने के लिए तैयार है
उसके पिता उसे ले खाना लाते हैं।
उल्लू को बहुत भूख लगती है।
वह अपना समय,
सोने और खाने में बिताता है।

दो दिन में एक और अंडा फूटता है।

अब छोटे उल्लू का एक भाई है।

जल्द ही सारे अंडे फूट जाते हैं।

जब वह लगभग एक सप्ताह का होता है,
तब उल्लू की आँखें खुल जाती हैं।
उसकी आँखें बड़ी और गोल हैं
और गहरी भूरी हैं।
वह उनसे रात में अच्छी तरह देख सकता है।
लेकिन वह सिर्फ़ सीधा आगे ही देख सकता है।
वह अपनी आँखें
ऊपर या नीचे
नहीं हिला सकता है।
वह उन्हें अगल-बगल
तक हिला नहीं सकता है।
उसे एक तरफ देखने के लिए
अपना पूरा सिर घुमाना होगा।

वह अपना सिर
चारों ओर घुमा सकता है
और अपने पीछे भी
देख सकता है।

अब वह अपने माता-पिता को
पहली बार देखता है।
उसकी माँ थोड़ी बड़ी है
उसके पिता से भी ज़्यादा बड़ी।
दोनों का चेहरा और छाती सफ़ेद है।

अब उल्लू का शरीर
छोटे, ऊनी पंखों से ढक गया है।

पांचों बच्चे उल्लू अब बड़े हो रहे हैं।

अब उन्हें ज़्यादा खाने की ज़रूरत है।

माँ उल्लू अपने साथी के साथ

शिकार पर जाती है

जिससे ज़्यादा खाना मिल सके।

वे रात में चूहों का शिकार करते हैं
और छोटे पक्षियों,
पतंगों और कीड़ों का भी।
वे चुपचाप उड़ते हैं।
वे ज़मीन पर दौड़ते चूहे की
आवाज़ को सुन सकते हैं।

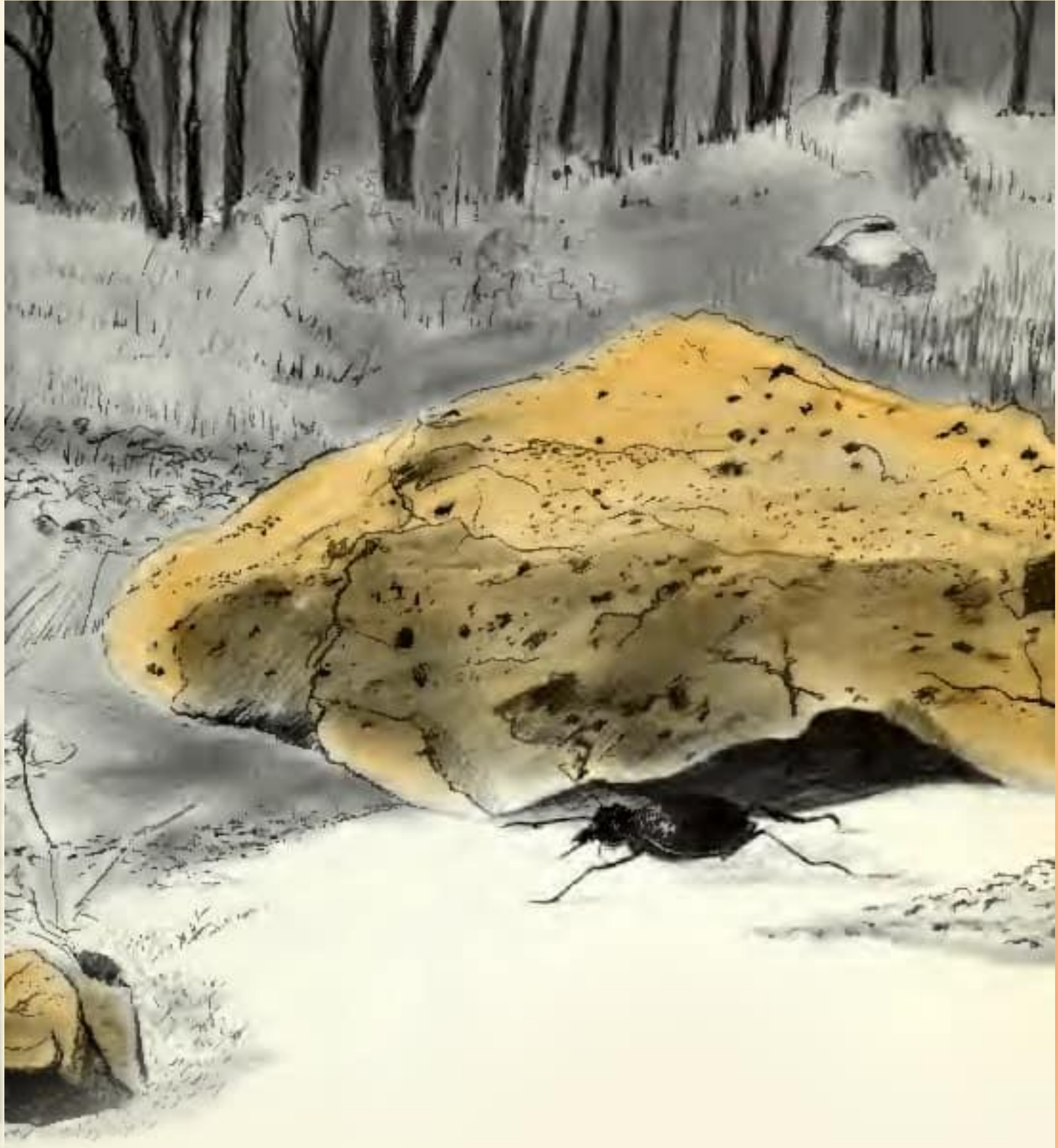

वे उस भृंग (बीटल) को देख सकते हैं
जो एक चट्टान के नीचे से
रेंगते हुए बाहर आता है।

जब उन्हें कोई चूहा या कीड़ा मिलता है,
वे उस पर झपट्टा मारते हैं।
वे अपने तेज़ पंजों से उसे मार डालते हैं।

फिर वे उसे घोंसले तक ले जाते हैं।
बच्चे मुंह खोले घोंसले में
उनका इंतज़ार कर रहे होते हैं।
बच्चे हमेशा भूखे रहते हैं।

हमारा बच्चा उल्लू उनमें सबसे बड़ा है
और सबसे मजबूत भी।
वह सबसे पहले
खाना खाने के लिए लड़ता है।
उसके खाना खाने ने के बाद ही
दूसरों की बारी आती है।

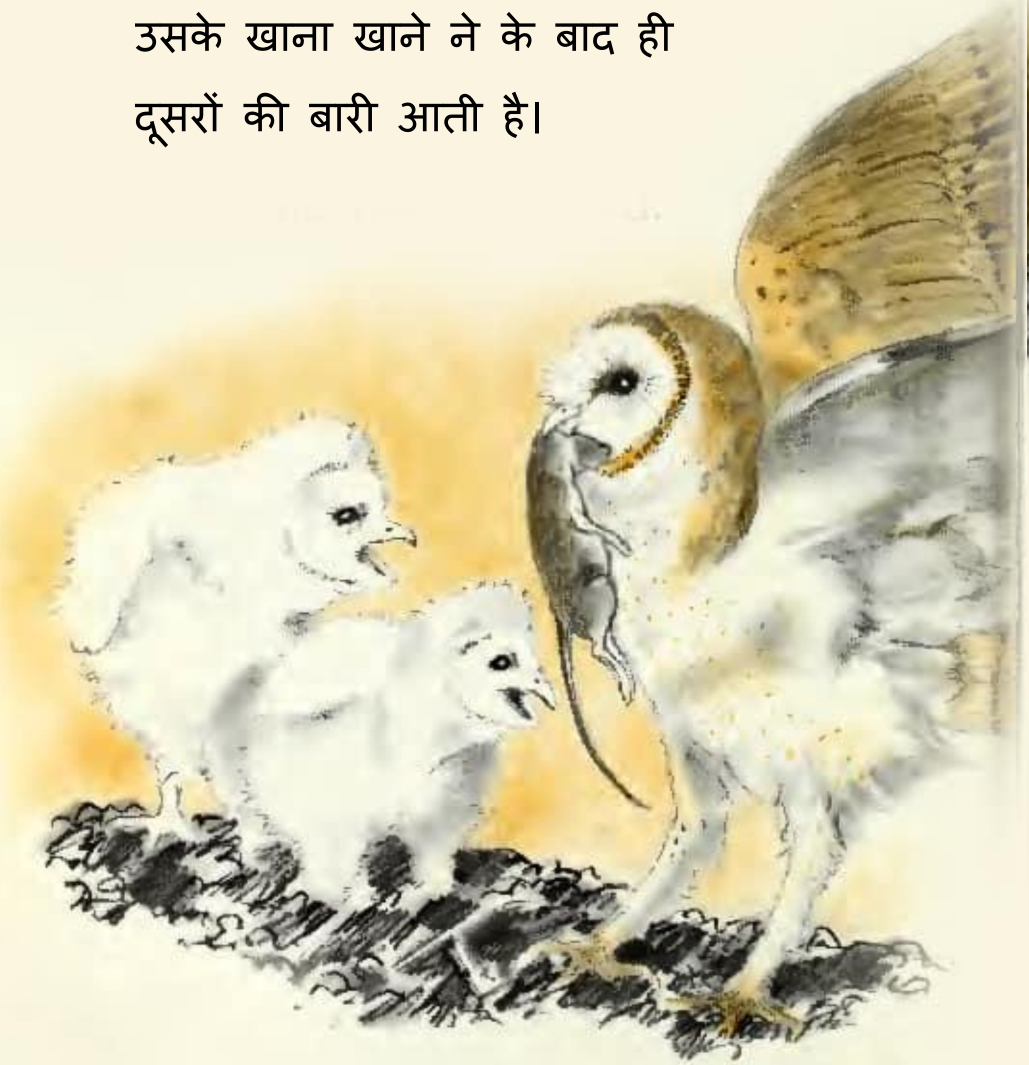

उल्लू अपना खाना चबाते नहीं हैं।
वे उसे पूरा निगल जाते हैं।
फिर वे हड्डियाँ हड्डी और पंख
थूक देते हैं, छोटे-छोटे बंडलों में।
इन बंडलों को पेलेट्स कहते हैं।

एक रात माँ उल्लू
अपने साथी के साथ शिकार पर जाती है।
तभी एक खतरा
खलिहान में प्रवेश करता है।
एक बिल्ली
दो पीली आँखें
एक अंधेरा साया
लहराती पूंछ के साथ
आती है!
बच्चे उल्लू आगे-पीछे झूलते हैं।
वे अपनी चोंच खोलते हैं
और फुफकारने की आवाज़ करते हैं।
बिल्ली छत पर चढ़ती है
उल्लूओं के घोंसले के ठीक नीचे।

बिल्ली पास आती है।

उल्लू उसे डराते नहीं हैं।

वह और करीब आती है।

वह उनपर कूदने ही वाली है

पर तभी माँ उल्लू वापस आती है।

ज़ूम!

माँ उल्लू बिल्ली पर झपट्टा मारती है

और अपने पंजों से उस पर वार करती है।

बिल्ली चिल्लाती है.

वह दूर कूदने की कोशिश करती है,

लेकिन वो ज़मीन पर गिर जाती है।

फिर वह जल्दी से

दरवाज़े से बाहर भाग जाती है।

माँ उल्लू
अपने परिवार के पास लौट आती है।
उल्लू के बच्चे सुरक्षित हैं

हमारा उल्लू अब दो महीने का हो गया है।
अब वह अपने पिता जितना ही बड़ा है।
उसके पंख चिकने और मुलायम हैं,
सफेद और सुनहरे भूरे।
अब समय आ गया है
कि वो उड़ना सीखे।

वह अपने पंख फड़फड़ाने
की कोशिश करता है।
वह कई दिनों तक अभ्यास करता है।
फिर वह नीचे देखता है।
ज़मीन तक का रास्ता बहुत लंबा है।
लेकिन एक घास का ढेर पास में है।
वह अपना सिर ऊपर-नीचे हिलाता है।

आखिरकार वो अपने पंख फैलाता है
और उड़ता है।
जब वह अपने पंख
फड़फड़ाता हुआ नीचे आता है।
तब वह घास के ढेर में
सुरक्षित उतरता है ।

एक-एक करके, उसके भाई
उसकी नकल करते हैं।
सबसे पहले युवा उल्लू अभ्यास करते हैं
वे खलिहान के अंदर चारों ओर उड़ते हैं।

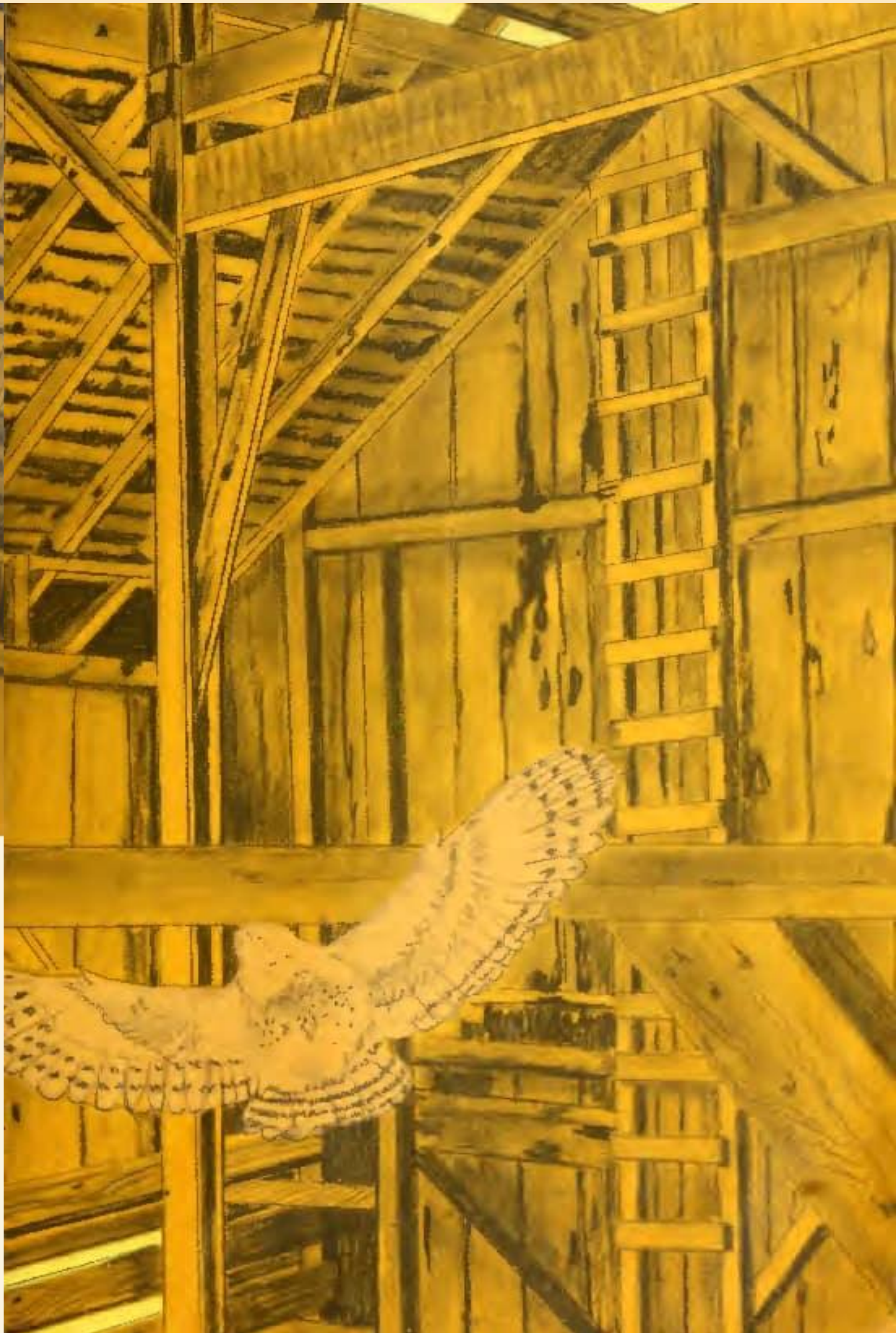

एक सुबह हमारा उल्लू
खलिहान के दरवाज़े के पास उड़ता है।
बाहर कुछ अजीब सा शोर है।
उल्लू उसे सुनता है।
वह अपने पंख फैलाता है।
वह छत पर उड़ना चाहता है।
लेकिन वो रास्ता अभी बहुत लंबा है।
वह अभी ज़्यादा ऊँचा नहीं उड़ पाता है।
वह खलिहान के फर्श पर गिर जाता है।
लेकिन वह फिर से कोशिश करता है।

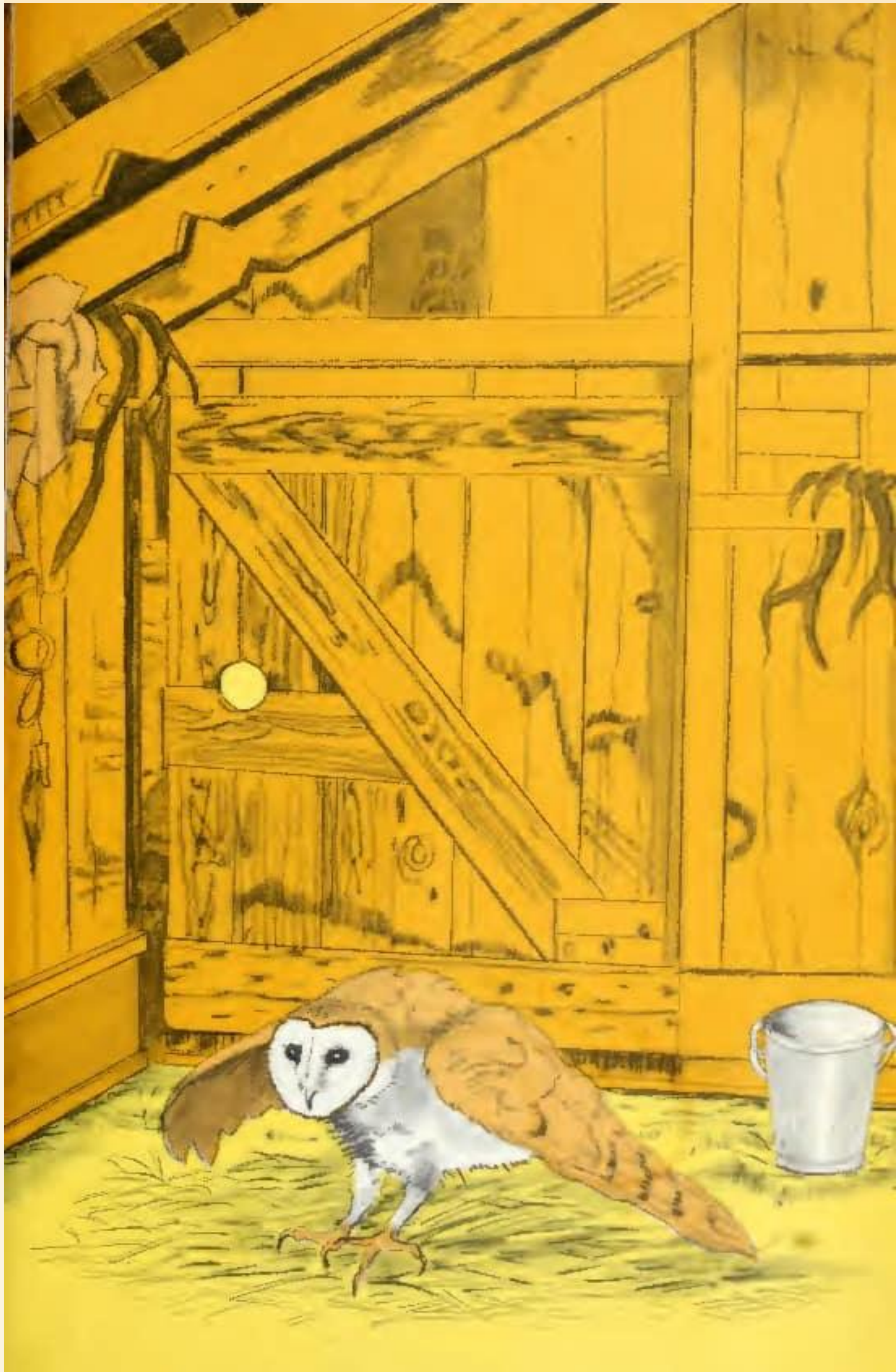

माँ उल्लू

ने भी शोर सुना है।

वह खलिहान के दरवाज़े तक

उड़कर जाती है।

शोर करीब आता है।

वो एक आदमी की आवाज़ है।

माँ उल्लू
उसे डराने की कोशिश करती है।
वह ज़मीन पर बैठती है
और अपने पंख फैलाती है।
वह फुफकारती है।
और वह एक तरफ से दूसरी तरफ झूलती है।
वह बहुत भयंकर दिखती है।

लेकिन वह आदमी उसे नहीं देख पाता।
वह खलिहान में नहीं आता है।
उल्लू छत पर उड़ गया है।
अब वह सुरक्षित है।

काफी कम समय में
उल्लूओं ने उड़ना सीख लिया है।
लेकिन वे अभी भी अपना पेट नहीं भर सकते।
जब वे भूखे होते हैं,
वे अपने माता-पिता को ज़ोर से पुकारते हैं।
कभी-कभी माँ उल्लू और उसके साथी को
उनके लिए पर्याप्त खाना नहीं मिल पाता है।
अब समय आ गया है कि उल्लुओं के बच्चे
खुद शिकार करना सीखें।

हमारा उल्लू रात में बाहर जाता है
अपने पिता और माता की तरह।
वह चुपचाप उड़ता है।
वह ज़मीन को देखता है
वह हर आवाज़ सुनता है।

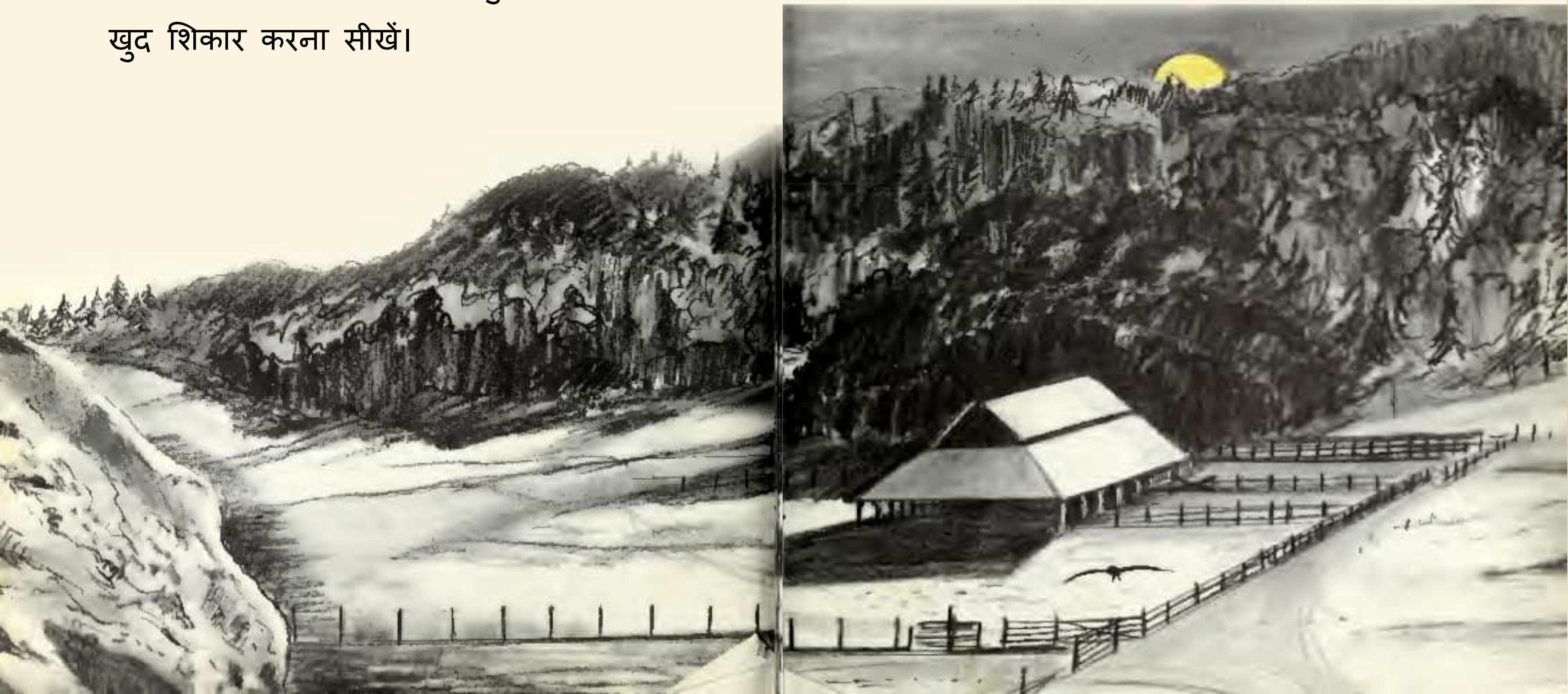

वहाँ सरसराहट की
आवाज़ आ रही है।
वह नीचे कूदता है।
लेकिन उसे कुछ नहीं मिलता।
वह सूखे पत्तों पर उतरता है।

फिर एक रात उसे एक
चीं-चीं की आवाज़ सुनाई देती है।
वह नीचे आता है, जमीन पर उतरता है
किसी नरम और टेढ़ी-मेढ़ी चीज़ पर।
उसने अपने लिए पहला भोजन -
एक खेत का चूहा पकड़ा है।

कुछ रातों बाद
छोटा उल्लू पेड़ पर बैठा है।
उसका भाई शिकार पर गया हुआ है।
वह उसे एक चूहा पकड़ते हुए देखता है।
उसका भाई उसे एक पेड़ के पास ले जाता है।
अचानक,
एक परछाई आसमान में उड़ती है।
यह उसके भाई को पेड़ से पकड़ लेता है
और उसे जंगल में ले जाता है।
यह एक बड़े सींग वाला उल्लू है,
और वो दूसरे उल्लुओं को खा जाता है।

अब दिन ठंडे हो रहे हैं।
पत्तियां पीली और लाल हो जाती हैं।
युवा उल्लू आगे भटकता है
खलिहान से कुछ दूर।
अब वह अपना पेट भर सकता है।
वह अपने माता-पिता को छोड़ने
के लिए काफी बड़ा हो गया है।
उसे एक नई जगह मिल जाती है
जहां शिकार करना अच्छा है।
वह पूरी सर्दी वहीं रहता है।

दिन के दौरान
वह अलग-अलग जगहों पर सोता है—
काभी एक पेड़ की शाखा पर,
या किसी खाली घर की छत के नीचे।
अंधेरा होने के बाद वह खाना ढूंढता है।

ठंडी हवा चल रही है।
ज़मीन जम जाती है
और बर्फ पड़ती है।

छोटे जानवर अपने बिलों में छिप जाते हैं।
सर्दियों में खाना मिलना मुश्किल होता है।
कभी-कभी युवा उल्लू पेट भरने के लिए
दिन में शिकार करता है।

समय बीतता है।

सूरज की रोशनी तेज़ होती जाती है।

बर्फ पिघलने लगती है।

सर्दी लगभग खत्म हो गई है।

एक ठंडी रात

छोटा उल्लू शिकार पर जाने के लिए तैयार है।

वह वैसे ही पुकारता है जैसे वह अक्सर करता है।

पर आज रात एक हल्की हूटिंग की आवाज़

उसे जवाब देती है।

वह एक बार फिर हूट करता है।

उसे फिर से एक जवाब मिलता है।

वह आवाज़ का अनुसरण करते हुए
मेपल के पेड़ की ओर जाता है।
वहां उसे एक मादा बार्न उल्लू मिलती है।
वह उत्साहित है।
वह अपने पंख फड़फड़ाता है।
वह उसके चारों ओर कई बार चक्कर लगाता है।
फिर वह वहां से उड़ जाता है।
वो कुछ ही मिनटों में वह लौटकर आता है।
अब उसकी चोंच में एक चूहा था।
वह उसे मादा के सामने गिरा देता है।
वह खाना ले लेती है।
इसका मतलब है कि मादा ने
नर उल्लू को अपने साथी के रूप में
स्वीकार कर लिया है।

जल्द ही उसका साथी उसे
एक मरे हुए पेड़ पर ले जाता है।
उसमें एक बड़ा छेद है।
मादा उस छेद के अंदर बैठती है।
यहीं पर वह अपने अंडे देगी।
यहाँ पर उल्लू उसके लिए खाना लाएगा
वो अपने बच्चों को खाना खिलाएगा
ठीक वैसे ही जैसे उसके पिता ने
उसके साथ पहले किया था।

छोटा उल्लू, मादा उल्लू के बगल में बैठा है
वे चहचहाते हैं और चोंच चटकाते हैं।
वे साथ मिलकर झूमते हैं
एक ओर से दूसरी ओर।
वे एक साथ बैठते हैं
और दिन में सो जाओ।
रात में वे शिकार करते हैं।

युवा उल्लू और उसका साथी
जीवन भर एक-साथ रह सकते हैं।
वे पंद्रह साल या उससे भी अधिक समय तक
जीवित रह सकते हैं।

लेखक का नोट

कई बार्न आउल जवानी में ही मर जाते हैं। कुछ इसलिए मर जाते हैं क्योंकि उन्हें काफ़ी खाना नहीं मिलता। कुछ को लोग मार देते हैं। लोग उनके सबसे बड़े दुश्मन होते हैं, क्योंकि वे अक्सर चूहों के लिए ज़हर डालते हैं। आउल इन जानवरों को खाते हैं और ज़हर से मर जाते हैं।